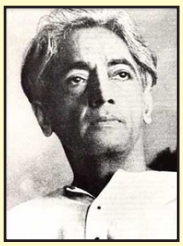

स्वयं से संवाद

जे.कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के आलोक में जीवन का अन्वेषण

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया डिजिटल प्रवेशांक

संकट तो मनुष्य की चेतना में है

The crisis is there. The crisis is not in the world, it is not the nuclear war, it is not the terrible divisions and the brutality that is going on. The crisis is in our consciousness, the crisis is what we are, what we have become.

Madras, 25 December 1982;
Mind Without Measure.

संकट बिलकुल सामने है। यह संकट कहीं संसार में नहीं है, यह परमाणु युद्ध का नहीं है, आसपास चल रही बेरहमी और बँटवारे में नहीं है। संकट हमारी चेतना में है, उसमें है जो हम हो गए हैं।

25 दिसंबर, 1982, मद्रास,
माइंड विदाउट मेशर

So, what is the meaning of all this existence? You may not want to look at it, you may want to avoid it....You give about twenty or thirty years to acquiring knowledge of physics, linguistics, biology, sociology, philosophy, psychoanalysis, psychiatry, and so on. You give years and years to it, and you don't give one day or even one hour to find out for yourself what you are and why you are living like this.

IIT-Bombay, 7 February 1984,
Why are You being Educated?

तो, इस सारे जीवन का अर्थ क्या है? हो सकता है कि आप इसे देखना न चाहते हों, इससे बचना चाहते हों... आप अपने बीस-तीस साल भौतिक-शास्त्र, भाषाविज्ञान, जीव-विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, मनोविश्लेषण या मनोरोगों के अध्ययन में लगा देते हैं। आप सालों-साल इसमें खर्च कर सकते हैं, और एक दिन या एक घंटा भर भी खुद यह पता लगाने में नहीं लगाते कि आप क्या हैं और क्यों इस तरह से जीवन जी रहे हैं।

आईआईटी-बम्बई, 7 फरवरी 1984,
वाइ आर यू बीइंग एड्यूकेटिड,

Are we wasting our lives? By that word wasting we mean dissipating our energy in various ways, dissipating it in specialized professions. Are we wasting our whole existence, our life? If you are rich, you may say, 'Yes, I have accumulated a lot of money, it has been a great pleasure.' Or if you have a certain talent, that talent is a danger to a religious life. Talent is a gift, a faculty, an aptitude in a particular direction, which is specialization. Specialization is a fragmentary process. So you must ask yourself whether you are wasting your life. You may be rich, you may have all

क्या हम अपने जीवन को बरबाद कर रहे हैं? बरबाद करने से मेरा मतलब है विभिन्न तरीकों से अपनी ऊर्जा को नष्ट करना, व्यावसायिक विशेषज्ञताओं में उसे गँवाना। क्या हम अपने पूरे जीवन को, अपने अस्तित्व को बरबाद कर रहे हैं? ''हाँ, मैंने बहुत दौलत जमा कर ली है, इसमें बहुत मज़ा है।'' या अगर आप में कोई प्रतिभा या हुनर है, वह प्रतिभा एक धार्मिक जीवन के लिए खतरा है। यह प्रतिभा एक कुदरती उपहार है, एक क्षमता, किसी खास दिशा में हासिल एक कौशल, जो एक तरह की महारत है। महारत, विशेषज्ञता एक तरह की खंडित प्रक्रिया है। तो ज़रूर आपको अपने आप से यह पूछना चाहिए कि आप अपने जीवन को व्यर्थ तो नहीं कर रहे। आप अमीर हो सकते

पृष्ठ 3 पर जारी

हिंदी में उपलब्ध कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

कृष्णमूर्ति साहित्य –

ध्यान
आमूल क्रांति की चुनौती
समय से परे
मन क्या है?
सोच क्या है?
शिक्षा क्या है?
ईश्वर क्या है?
ज्ञात से मुक्ति
अंतिम वार्ताएं
स्कूलों को पत्र
ये रिश्ते क्या हैं?
संस्कृति का प्रश्न
अंतर्दृष्टि का प्रश्न
जीवन और मृत्य
सत्य और यथार्थ
आज़ादी की खोज
जीवन एक अन्वेषण
प्रथम और अंतिम मुक्ति
सुखी वही जो कुछ भी नहीं
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य
जीवन भाष्य – भाग 1, 2 व 3
आपको अपने जीवन में क्या करना है?
प्रेम क्या है? अकेलापन क्या है?

कृष्णमूर्तिविषयक साहित्य –

जे.कृष्णमूर्ति – एक जीवनी
जिद्दू कृष्णमूर्ति – संस्मरण एवं व्यक्तित्व
जिद्दू कृष्णमूर्ति – शिक्षाओं का अन्वेषण

बंधुवर,
'स्वयं से संवाद' अब से डिजिटली प्रकाशित हुआ करेगा।
आगामी अंक मई 2021 में प्रकाशित होगा।
द्विभाषी प्रस्तुति आपको कैसी लग रही है?
आपका फीडबैक अपेक्षित है।
–'स्वयं से संवाद' टीम

नीचे दिए गये लिंक पर आप भारतीय भाषाओं की हमारी वेबसाइट पर हिन्दी व अन्य प्रांतीय भाषाओं में कृष्णमूर्ति जी की शिक्षाओं के अनुवादित अंशों को पढ़ व डाउनलोड कर सकते हैं – http://www.jkrishnamurtionline.org/

कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के वीडियोज़ हिन्दी सब्टाइटिल्स के साथ उपलब्ध हैं। यूट्यूब पर KFI Hindi Channel खोजें

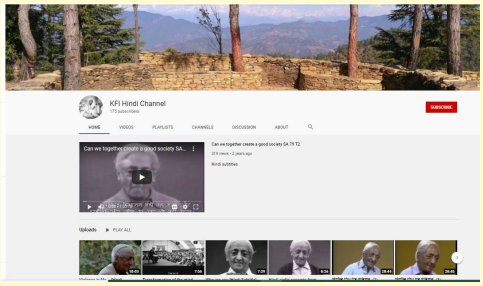

https://www.youtube.com/channel/UCveodIIPPm2FmnhGmFlDzMA

राजघाट में होने वाले सभी पूर्वघोषित कार्यक्रम फिलहाल Covid-19 के चलते स्थगित हैं। इस बारे में किसी भी नयी स्थिति की सूचना आप तक तुरंत पहुँचेगी।

'स्वयं से संवाद'
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इण्डिया
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001
ईमेल : studycentre@rajghatbesantschool.org
मोबाइल : 6394751394
संपादक : विजय कुमार छाबड़ा
सह–संपादक : अरविंद शुक्ल

kinds of faculties, you may be a specialist, a great scientist or a businessman, but at the end of your life has all that been a waste?

Bombay, 10 February 1985;
That Benediction is Where You are.

हैं, आपके पास हर तरह की योग्यता हो सकती हैं, आप किसी काम में माहिर हो सकते हैं, कोई महान वैज्ञानिक या एक कुशल व्यापारी, लेकिन आपके जीवन के अंत में वह सब कुछ व्यर्थ ही रहा; है न?

10 फ़रवरी, 1985,
दैट बैनिडिक्शन इज़ वेयर यु आर

When the entertainment industry takes over, as it is gradually doing now, when the young people, the students, the children, are constantly instigated to pleasure, to fancy, to romantic sensuality, the words restraint and austerity are pushed away, never even given a thought...You probably won't even listen to what the implications of austerity are. When you have been brought up from childhood to amuse yourself and to escape from yourself through entertainment, and when most of the psychologists say that you must express everything you feel and that any form of holding back or restraint is detrimental, leading to various forms of neuroticism, you naturally enter more and more into the world of sport, amusement, entertainment, all helping you to escape from what you are.

18 March, 1983
Krishnamurti to Himself,

जब मनोरंजन का व्यापार हर चीज़ पर छा जाएगा, जैसा कि धीरे-धीरे यह करता जा रहा है, जब नौजवानों को, विद्यार्थियों और बच्चों को लगातार सुख और मज़े के पीछे, रोमांटिक कामुकता और कल्पनाओं के पीछे दौड़ने को उकसाया जा रहा है, जब निग्रह और संयम जैसे शब्द पीछे धकेले जा रहे हैं, कभी उनके बारे में सोचा भी नहीं जाता...आप शायद यह सुनना भी नहीं चाहते कि संयम का मतलब क्या है। जब बचपन से ही आपको ऐसे पाला-पोसा जाता है कि खुद को बहलाना कैसे है और कैसे मनोरंजन के ज़रिये खुद से भागना है - वह मनोरंजन धार्मिक किस्म का हो या किसी और तरह का - और जब ज़्यादातर मनोवैज्ञानिक यही कहते हों कि आपको हर चीज़ व्यक्त कर देनी चाहिए, जो भी आप महसूस करते हों, और किसी भी चीज़ को भीतर रोकना या उसको नियंत्रित रखना नुकसानदायक है जो तरह-तरह के मानसिक असंतुलनों की तरफ ले जा सकता है, तो आप स्वभावतः अधिकाधिक खेलों, मन-बहलाव और मनोरंजन की दुनिया में खोते चले जाते हैं, यह सारा कुछ आपको उससे दूर ले जाने में मदद करता है जो कि आप हैं।

18 मार्च 1983,
कृष्णमूर्ति टू हिमसेल्फ,

With the development of robot, man will only have perhaps two hours of work a day. This may be going to happen within the foreseeable future. Then what will man do? Is he going to be absorbed in the field of entertainment? ....Or is he going to turn inwardly, which is not an entertainment but something which demands great capacity of observation, examination, and non-personal perception? These are the two possibilities.

Saanen, 21 July 1981;
The Network of Thought.

रोबोट के विकास के बाद आदमी को शायद दिन में सिर्फ दो घंटे ही काम करने की ज़रूरत पड़ेगी। हो सकता है ऐसा बहुत जल्द हो जाए, बिलकुल निकट भविष्य में। फिर आदमी क्या करेगा? क्या वह मनोरंजन के आयाम में डूब कर रह जाएगा? ...या फिर वह भीतर की तरफ पलटेगा, जो कि कोई मनोरंजन नहीं है बल्कि उसके लिए तो अवलोकन, जांच-पड़ताल और प्रत्यक्ष बोध के विशद सामर्थ्य की जरूरत पड़ती है, एक ऐसा बोध जो व्यक्तिगत नहीं होता। तो यही दो संभावनाएं हैं।

21 जुलाई 1981,
द नेटवर्क ऑव थॉट

Therefore the important thing...is self-knowledge. Without understanding oneself, there cannot be order in the world; without exploring the whole process of thought, feeling, and action in oneself, there cannot possibly be world peace, order, and security. Therefore the study of oneself is of primary importance, and it is not a process of escape.

This study of oneself is not mere inaction. On the contrary, it requires an extraordinary awareness in everything that one does, an awareness in which there is no judgement, no condemnation or blame. This awareness of the total process of oneself as one lives in daily life is not narrowing, but ever-expanding, ever-clarifying; and out of this awareness comes order, first in oneself and then externally in one's relationships.

Poona, 19 September 1948;
The Collected Works, Vol. V

इसलिए महत्त्व की बात है...स्वबोध, स्वयं को जानना। बिना खुद को समझे, संसार में व्यवस्था नहीं आ सकती; अपने भीतर की सोच, भावना और कर्म की समग्र प्रक्रिया की तहकीकात किए बिना, संसार में अमन, व्यवस्था और सुरक्षा का कायम हो पाना एक तरह से असंभव ही है। इसलिए अपने आप का अध्ययन प्राथमिक महत्त्व का है, और यह पलायन की प्रक्रिया, बच कर भागने का सिलसिला नहीं है।

स्वयं का यह अध्ययन अकर्म, निठल्लापन नहीं है। बल्कि इसके ठीक उलट, इसमें तो बहुत ही गज़ब की सजगता चाहिए; जो कुछ भी हम करते हैं उसके प्रति एक ऐसी जागरूकता जिसमें कोई फैसला नहीं है, कोई निंदा-आलोचना या दोष लगाना नहीं है। अपना रोज़ाना का जीवन जीते हुए अपने होने की कुल प्रक्रिया के प्रति यह सजगता, कोई सिकुड़ने वाली बात नहीं है, बल्कि खुलते और खिलते जाना है, निरंतर स्पष्ट होते जाना; और व्यवस्था इसी सजगता से आती है, पहले अपने आप में और फिर बाहर अपने सबंधों में।

19 सितंबर, 1948, पूना
द कलेक्टेड वर्क्स, वॉल्यूम 5

When you close the doors and windows of the house and live inside, you feel safe, secure, unmolested. But life is not like that. Life is constantly knocking on the door, trying to push the windows open all the time so that you may see more, but if there is fear and you close all the windows, the knocking grows louder. So the more outward securities you cling to, the more life comes and pushes you.

Varanasi, 16 December 1952;
The Collected Works, Vol. II.

जब आप घर के दरवाजे-खिड़कियाँ बंद करके अंदर बैठ जाते हैं, आपको लगता है अब सब ठीक है, कोई खतरा नहीं, एकदम सुरक्षित। लेकिन जीवन ऐसा नहीं है। जीवन लगातार दरवाजा खटखटा रहा है, हर वक्त खिड़कियाँ खोल देने की कोशिश में है ताकि आप कुछ और भी देख सकें; लेकिन अगर आप डरे हुए हैं और सभी खिड़कियाँ आपने बंद कर ली हैं, तो खटखटाहट तेज़ होती जाती है। सो जितना ज़्यादा आप बाहरी सुरक्षाओं से चिपकते हैं, उतना ही जीवन आगे आकर आपको और ज़ोर से धक्का देता है।

16 दिसंबर, 1952, वाराणसी,
द कलेक्टेड वर्क्स, वॉल्यूम 2

प्रत्येक विचार, कर्म और भाव के प्रति सजगता

Question: You say the present crisis is without precedent. In what way is it exceptional?

Krishnamurti:
Obviously the present crisis throughout the world is exceptional, without precedent. There have been crises of varying types at different periods throughout history, social, national, political. Crises come and go; economic recessions, depressions, come, get modified, and continue in a different form. We know that; we are familiar with that process. Surely the present crisis is different, is it not? It is different first because we are dealing not with money nor with tangible things but with ideas. The crisis is exceptional because it is in the field of ideation. We are quarrelling with ideas, we are justifying murder; everywhere in the world we are justifying murder as a means to a righteous end, which in itself is unprecedented. Before, evil was recognized to be evil, murder was recognized to be murder, but now murder is a means to achieve a noble result. Murder, whether of one person or of a group of people, is justified, because the murderer, or the group that the murderer represents, justifies it as a means of achieving a result which will be beneficial to man. That is, we sacrifice the present for the future—and it does not matter what means we employ as long as our declared purpose is to produce a result which we say will be beneficial to man. Therefore, the implication is that a wrong means will produce a right end and you justify the wrong means through ideation.

प्रश्न : आप कहते हैं कि वर्तमान संकट अभूतपूर्व है। यह अभूतपूर्व किस अर्थ में है?

कृष्णमूर्ति : स्पष्ट है कि विश्व भर में दिख रहा वर्तमान संकट असाधारण है, अभूतपूर्व है। इतिहास में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनीतिक संकट आते रहे हैं। संकट आते हैं और चले जाते हैं, आर्थिक व्यवस्था में उथल-पुथल होती रहती है, कुछ परिवर्तन, संशोधन होते हैं, पर कुल मिलाकर वही ढर्रा जारी रहता है। इस सारी प्रक्रिया से हम अच्छी तरह परिचित हैं। निस्संदेह वर्तमान संकट कुछ अलग प्रकार का है, है कि नहीं? वह अलग इसलिए है कि वह धन या अन्य स्थूल वस्तुओं को लेकर नहीं है, बल्कि धारणाओं से जुड़ा है। वह संकट असाधारण इसलिए है कि वह सोच-विचार व मनोधारणा के क्षेत्र में है। हम विचारों के झगड़ों में उलझे हैं, हत्या का समर्थन करने में लगे हैं; उचित साध्य की प्राप्ति के लिए हत्या का साधन के तौर पर संसार भर में समर्थन हो रहा है, और ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। इससे पहले पाप को पाप माना जाता रहा है, हत्या को हत्या ही समझा गया है, परंतु हत्या आज किसी मान्य लक्ष्य को उपलब्ध करने का साधन बन गई है। हत्या चाहे व्यक्ति की हो या समूह की, उसे आज सही माना जा रहा है, मनुष्य के लिए कल्याणकारी किसी वांछित फल का साधन मान कर उसका समर्थन किया जा रहा है। अर्थात हम भविष्य के लिए वर्तमान का बलिदान कर देते हैं, और जब तक हमारा घोषित प्रयोजन एक ऐसे लक्ष्य को प्राप्त करना है जिसे हम मनुष्य के लिए कल्याणकारी मानते हैं, हमारे लिए इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि हम कौन सा ज़रिया इस्तेमाल करते हैं। यानी ऐसा माना जा रहा है कि किसी अनुचित साधन से उचित साध्य पाया जा सकता है, और फिर वैचारिक कसरत के सहारे हम उस अनुचित साधन का समर्थन करने लगते हैं।

The root of fear is the uncertainty of security

सुरक्षा की अनिश्चितता ही भय का मूल है।

12 नवंबर, 1972,
दूसरी सार्वजनिक वार्ता, नई दिल्ली,

In the various crises that have taken place before, the issue has been the exploitation of things or of man; it is now the exploitation of ideas, which is much more pernicious, much more dangerous, because the exploitation of ideas is so devastating, so destructive. We have learned now the power of propaganda and that is one of the greatest calamities that can happen: to use ideas as a means to transform man. That is what is happening in the world today. Man is not important—systems, ideas, have become important. Man no longer has any significance. We can destroy millions of men as long as we produce a result and the result is justified by ideas. We have a magnificent structure of ideas to justify evil and surely that is unprecedented. Evil is evil; it cannot bring about good. War is not a means to peace. War may bring about secondary benefits, like more efficient aeroplanes, but it will not bring peace to man. War is intellectually justified as a means of bringing peace; when the intellect has the upper hand in human life, it brings about an unprecedented crisis.

इससे पहले जो तमाम संकट आए हैं, उनमें समस्या वस्तुओं के अथवा मनुष्यों के दोहन-शोषण की रही है; आज यह समस्या धारणाओं की उठापटक, उनके दुरुपयोग की है जो कहीं अधिक घातक है, कहीं अधिक खतरनाक है, क्योंकि विचारों का दुरुपयोग बड़ा विनाशकारी, बड़ा विध्वंसक होता है। हमने अब प्रचार की शक्ति को जान लिया है, और यही सर्वाधिक भयावह संकट है : मनुष्य में बदलाव के लिए धारणाओं का सहारा लेना। आज विश्व में यही हो रहा है। मनुष्य महत्त्वपूर्ण नहीं रहा, महत्त्वपूर्ण हो गई हैं विचार-प्रणालियां, धारणाएं। मनुष्य का कोई महत्त्व नहीं रहा। हम लाखों मनुष्यों को नष्ट कर सकते हैं, बशर्ते हम कोई तय नतीजा पेश कर पाएं, और उस नतीजे को, लक्ष्य को सही ठहराने के लिए हमारे पास विचार हैं, धारणाएं हैं। बुराई का समर्थन करने के लिए हमारे पास धारणाओं का एक शानदार ढांचा है और निस्संदेह यह स्थिति अभूतपूर्व है। बुराई, बुराई है, वह अच्छाई को जन्म नहीं दे सकती; युद्ध शांति का साधन नहीं बन सकता। युद्ध कुछ गौण लाभ दे सकता है, जैसे अधिक कार्य-क्षमता वाले वायुयानों का निर्माण, परंतु वह मनुष्य के लिए शांति नहीं ला सकता। और हम युद्ध को शांति लाने के साधन के बतौर तार्किक रूप से सही ठहरा रहे हैं। बौद्धिकता जब मानव जीवन पर हावी हो जाती है, तो अभूतपूर्व संकट बरपाया करती है।

Inquiry and investigation implies that there is no investigator, only investigation

जाँच-परख और अन्वेषण में यह निहित है कि अन्वेषक कोई नहीं है, बस अन्वेषण है।

दूसरी सार्वजनिक वार्ता, मद्रास (चेन्नई), 25 दिसंबर, 1977

There are other causes also which indicate an unprecedented crisis. One of them is the extraordinary importance man is going to sensate values, to property, to name, to caste and country, to the particular label you wear. You are either a Mohammedan or a Hindu, a Christian or a Communist. Name and property, caste and country, have become predominantly important, which means that man is caught in sensate value, the value of things, whether made by the mind or by the hand. Things made by the hand or by the mind have become so important that we are killing, destroying, butchering, liquidating each other because of them. We are nearing the edge

इसके अतिरिक्त इस अभूतपूर्व आपदा के सूचक अन्य कारण भी हैं, जैसे कि ऐंद्रिय मूल्यों को, संपत्ति को, नाम को, जाति और देश को, अपने-अपने लेबल को असाधारण महत्त्व देना। आप या तो मुसलमान कहलाते हैं या हिंदू, ईसाई या साम्यवादी। यश और संपत्ति, जाति और देश प्रमुख हो गए हैं, अर्थात मनुष्य ऐंद्रिय मूल्यों में, वस्तुओं के मूल्यों में फँस गया है। हाथ अथवा मन द्वारा रचित वस्तुएं इतनी महत्त्वपूर्ण हो गईं हैं कि हम इनके लिए मारकाट, विनाश, एक-दूसरे की हत्या और एक-दूसरे का सफाया करने पर तुले हैं। हम विनाश के कगार पर खड़े हैं; हमारा प्रत्येक कर्म, चाहे वह राजनीतिक हो

of a precipice; every action is leading us there, every political, every economic action is bringing us inevitably to the precipice, dragging us into this chaotic, confusing abyss. Therefore the crisis is unprecedented and it demands unprecedented action. To leave, to step out of that crisis, needs a timeless action, an action which is not based on idea, on system, because any action which is based on a system, on an idea, will inevitably lead to frustration. Such action merely brings us back to the abyss by a different route. As the crisis is unprecedented there must also be unprecedented action, which means that the regeneration of the individual must be instantaneous, not a process of time. It must take place now, not tomorrow; for tomorrow is a process of disintegration. If I think of transforming myself tomorrow I invite confusion, I am still within the field of destruction. Is it possible to change now? Is it possible completely to transform oneself in the immediate, in the now? I say it is.

The point is that as the crisis is of an exceptional character to meet it there must be revolution in thinking; and this revolution cannot take place through another, through any book, through any organization. It must come through us, through each one of us. Only then can we create a new society, a new structure away from this horror, away from these extraordinarily destructive forces that are being accumulated, piled up; and that transformation comes into being only when you as an individual begin to be aware of yourself in every thought, action and feeling.

या आर्थिक, हमें अनिवार्य रूप से उसी ओर ले जा रहा है, दुर्व्यवस्था तथा भ्रांति के अतल में घसीट रहा है। निस्संदेह संकट अभूतपूर्व है और इसके लिए अभूतपूर्व कर्मशीलता की आवश्यकता है। इस संकट से बाहर निकलने के लिए, इससे बचने के लिए कालातीत, समय के बंधन से मुक्त कर्म की आवश्यकता है, ऐसा कर्म जो किसी धारणा या पद्धति पर आधारित न हो, क्योंकि पद्धति पर आधारित कर्म तो हमें अनिवार्यतः कुंठा और निराशा की ओर ले जायेगा। ऐसा कर्म घुमा-फिरा कर वापिस अतल में, गर्त में ले आएगा। चूंकि संकट अभूतपूर्व है, उससे निपटने के लिए अभूतपूर्व कर्म की ही ज़रूरत है, अर्थात व्यक्ति का पुनरुत्थान, उसमें नये जीवन का संचार तत्काल हो, न कि समय की प्रक्रिया के घेरे में। इसे अभी होना है न कि कल, क्योंकि भावी कल विघटन की, बिखराव की प्रक्रिया है। यदि मैं अपने में बदलाव कल पर छोड़ता हूँ तो संभ्रम को, गड़बड़ी को आमंत्रित करता हूँ और मैं ज्यों-का-त्यों विनाश के क्षेत्र में बना रहता हूँ। क्या मैं अभी, इसी वक्त बदल सकता हूँ? क्या तत्क्षण, इसी वक्त, मुझमें पूरी तरह से परिवर्तन हो सकता है? मेरा कहना है, हाँ।

कहने का अभिप्राय है : चूंकि संकट असाधारण है, उसका सामना करने के लिए विचार-क्रिया में भी क्रांति का घटित होना ज़रूरी है। और यह क्रांति किसी अन्य के द्वारा, किसी पुस्तक के द्वारा, किसी संगठन के द्वारा नहीं लाई जा सकती। हमें ही, हममें से प्रत्येक को इसे लाना होगा। तभी हम इन असाधारण विनाशकारी शक्तियों के विराट जमघट से हटकर एक नवीन संरचना, एक नये समाज का सृजन कर सकते हैं; और यह आमूल परिवर्तन तभी संभव है जब आप और हम, व्यक्ति के तौर पर प्रत्येक विचार, कर्म और भाव के प्रति सजग होना शुरू कर दें।

I refuse to be your guru. Followers destroy the guru,
and the guru destroys the followers.
मैं आपका गुरु होने से इनकार करता हूँ।
अनुयायी गुरु को तबाह कर देते हैं
और गुरु अनुयायियों को।

तीसरी सार्वजनिक वार्ता, मद्रास (चेन्नई), 3 जनवरी, 1978

सुरक्षा की मांग की भ्रामकता

Fear exists so long as there is accumulation of the known, which creates the fear of losing. Therefore fear of the unknown is really fear of losing the accumulated known. Accumulation invariably means fear, which in turn means pain; and the moment I say "I must not lose" there is fear. Though my intention in accumulating is to ward off pain, pain is inherent in the process of accumulation. The very things which I have create fear, which is pain.

जब तक ज्ञात का संचय होता है, उसके खो जाने का डर भी बना रहता है, इसलिए जो अज्ञात का भय है, वह वास्तव में संचित हुए ज्ञात के खो जाने का भय है। संचय है तो भय का होना निश्चित है और भय के साथ कष्ट का होना, और जिस क्षण मैं यह कहता हूँ कि मुझे इस संचित को खोना नहीं चाहिए, भय पैदा हो जाता है। हालांकि संचय करने के पीछे मेरी मंशा कष्ट को दूर करने की होती है, फिर भी इसकी प्रक्रिया में कष्ट समाया रहता है। मेरे द्वारा संचित वस्तुएं ही भय पैदा करती हैं, और भय ही पीड़ा है।

The seed of defence brings offence. I want physical security; thus I create a sovereign government, which necessitates armed forces, which means war, which destroys security. Wherever there is a desire for self-protection, there is fear. When I see the fallacy of demanding security I do not accumulate any more. If you say that you see it but you cannot help accumulating, it is because you do not really see that, inherently, in accumulation there is pain.

First and the Last Freedom

आत्मरक्षा की भावना के बीज से ही आक्रामकता उपजती है। मैं भौतिक सुरक्षा चाहता हूँ और इसके लिए मैं एक संप्रभुता-संपन्न सरकार निर्मित करता हूँ, और इसे सेनाओं की ज़रूरत होती है जिसका अर्थ होता है युद्ध, और अंत में सुरक्षा ही नष्ट हो जाती है। जहां कहीं भी व्यक्ति आत्मसुरक्षा चाहता है, वहीं भय होता है। जब मैं सुरक्षा की मांग की भ्रामकता को देख लेता हूँ, संचय करना बंद कर देता हूँ। यदि आप कहते हैं कि आप इसे समझते तो हैं, पर फिर भी आप बिना संचय किए नहीं रह सकते, तो इसका कारण यही है कि आपने वास्तव में इस बात को नहीं देखा कि संचय में ही पीड़ा निहित है।

प्रथम और अंतिम मुक्ति से

Have you ever sat very silently, not with your attention fixed on anything, not making an effort to concentrate, but with the mind very quiet, really still, then you hear everything, don't you? You hear the far-off noises as well as those that are nearer and those that are very close by, the immediate sounds - which means, really, that you are listening to everything. Your mind is not confined to one narrow little channel. If you can listen in this way, listen with ease, without strain, you will find an extraordinary change taking place within you, a change which comes without your volition, without your asking, and in that change there is great beauty and depth of insight.

'Think on These Things,' chapter 4

क्या आप कभी शांत बैठे हैं, एकदम शांत, बिल्कुल निश्चल, जब आपका ध्यान किसी वस्तु विशेष पर एकाग्र नहीं किया जा रहा होता, जब आप उसे कहीं केंद्रित करने का प्रयास नहीं कर रहे होते? तब आपको सब कुछ सुनाई देता है, है कि नहीं? तब आप बहुत दूर की ध्वनियाँ सुनते हैं, कम दूर की ध्वनियाँ सुनते हैं, नजदीक की ध्वनियाँ सुनते हैं और एकदम पास की ध्वनियाँ सुनते हैं। इसका अर्थ है आप सचमुच प्रत्येक ध्वनि सुन रहे हैं, आपका मन अब किसी संकुचित घेरे में सीमित नहीं है। यदि आप इस प्रकार सुन सकते हैं, इत्मीनान के साथ, विश्राम के साथ, तब आप महसूस करेंगे कि आपके अंदर एक अद्‌भुत परिवर्तन घटित हो रहा है, एक ऐसा परिवर्तन जो आपके चाहने से, आपके प्रयास से नहीं आता। इस परिवर्तन में एक महान सौंदर्य होता है और एक गहरी अंतर्दृष्टि।

'थिंक ऑन दीज़ थिंग्ज़', अध्याय 4 से